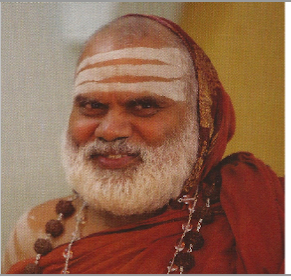

Voice of Jagadguru

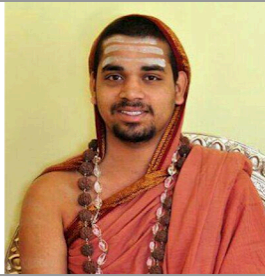

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

अनुग्रह भाषण

दूसरों को कभी चोट न पहुँचाएँ, अच्छे विचार विकसित करें

मनुष्य को हमेशा दुनिया के सभी लोगों के कल्याण के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। उसे किसी के प्रति घृणा पैदा नहीं करनी चाहिए। अगर कोई उसे नुकसान पहुंचाता भी है, तो भी उसकी क्षमा करने की प्रवृत्ति होनी चाहिए। उसे कभी भी बुरे विचारों का मनोरंजन नहीं करना चाहिए या हिंसक रूप से जवाबी कार्रवाई नहीं करनी चाहिए। यह एक सतपुरुष की विशेषता है। अगर कोई दूसरों को नुकसान पहुंचाना चाहता है, तो यह उस पर वापस उछलेगा, जैसे कि दीवार पर फेंकी गई गेंद।

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पावन (पूज्य) महासन्निधानम श्री श्री श्री भारत तीर्थ स्वामीजी ने जगद्गुरु श्री आदि शंकराचार्य की मूर्ति के साथ एक सजाए गए वाहन में श्री शारदांबा की मूर्ति की पूजा की, जिसे कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पास तीतवाल में पवित्र किया जाना था, 24 जनवरी, 2023 को श्रृंगेरी से अपनी यात्रा शुरू की।

कन्दुको भित्तिनिक्षिप्त इव प्रतिफलन्मुहुः । आपतत्यात्मनि प्रायो दोषोऽन्यस्य चिकीर्षतः ॥

यह न समझ पाने पर, कुछ लोग हमेशा दूसरों को नुकसान पहुँचाने की हिम्मत करते हैं। वे अच्छी सलाह को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। दुर्योधन ने किसी की सलाह नहीं मानी। वह पांडवों के खिलाफ एक के बाद एक अत्याचार करते रहे। उन्हें अपने गलत कामों के लिए कोई पछतावा नहीं था। उसके सारे दुष्ट कृत्यों ने अंततः उसे नष्ट कर दिया ।

इसलिए किसी को भी किसी को चोट पहुँचाने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। अगर कोई अनजाने में दूसरों को नुकसान पहुंचाता है, तो उसे पश्चाताप करना चाहिए और देखना चाहिए कि गलती फिर से न हो।

जो कोई भी बिना किसी पश्चाताप के पाप करता है, और अपने पापपूर्ण तरीकों को जारी रखता है, वह परिस्थितियों का अनुभव करेगा जैसे कि वह एक अथाह गड्ढे में डूब गया है।

हर कोई इसे अच्छी तरह से समझे, अच्छे विचार विकसित करे और एक अच्छा जीवन जीते।

यस्तु पूर्वकृतं पापमविमृश्यानुवर्तते । अगाधपङ्के दुर्मेधा विषमे विनिपात्यते ॥

--जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

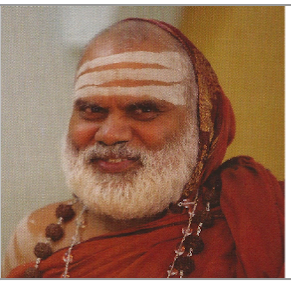

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

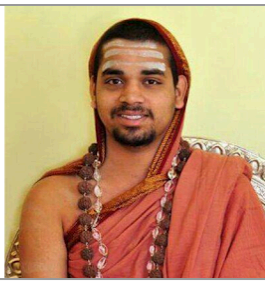

||आत्मबोध:||

||ātmabodha:||

व्यापृतेष्विन्द्रियेष्वात्मा व्यापारीवाविवेकिनाम् ।

दृश्यतेऽभ्रेषु धावत्सु धावन्निव यथा शशी ॥ १९ ॥

जब बादल आकाश में चलते हैं तो चंद्रमा (दौड़ता हुआ) बहता हुआ (दौड़ता हुआ) दिखाई देता है। इसी तरह गैर-भेदभावपूर्ण व्यक्ति के लिए आत्मा सक्रिय प्रतीत होती है जब इसे इन्द्रिय-अंगों के कार्यों के माध्यम से देखा जाता है।

आत्मचैतन्यमाश्रित्य देहेन्द्रियमनोधियः ।

स्वक्रियार्थेषु वर्तन्ते सूर्यलोकं यथा जनाः ॥ २० ॥

चेतना की ऊर्जा या आत्मा के आधार पर शरीर, इंद्रियां, मन और बुद्धि अपनी-अपनी गतिविधियों में संलग्न होते हैं, जैसे पुरुष सूर्य के प्रकाश के आधार पर काम करते हैं।

(जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य श्री सन्निधानम श्री श्री श्री विधुशेखर भारती महास्वामीजी श्रीनागर में ६ जून 2023 , श्रृंगेरी जगद्गुरु शंकराचार्य श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी के आशीर्वाद और निर्देश से जगद्गुरु श्री श्री विधुशेखर भारती महास्वामीजी ने जम्मू और कश्मीर की 3 दिवसीय विजय यात्रा की और तीतवाल में श्री शारदा मंदिर का प्रतिष्ठा कुंभभिषेक किया .. विजय यात्रा)

देहेन्द्रियगुणान्कर्माण्यमले सच्चिदात्मनि ।

अध्यस्यन्त्यविवेकेन गगने नीलतादिवत् ॥ २१ ॥

मूर्ख, क्योंकि उनमें भेदभाव की अपनी शक्तियों की कमी होती है, आत्मा, निरपेक्ष-अस्तित्व-ज्ञान (सत सत्-चित्) पर शरीर और इंद्रियों के सभी विविध कार्यों को अधिरोपित करते हैं, जैसे वे आकाश को नीले रंग और इसी तरह के गुण देते हैं।

जारी रहेगा...)

धर्मशास्त्र का मार्ग

इस भाग में हम प्रश्नोत्तर रूप में "धर्मशास्त्र का मार्ग" देखेंगे। "धर्मशास्त्र" से संबंधित हमारी शंकाओं के समाधान के लिए, पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्भवानंद आश्रम, वेदपुरी, थेनी, वैदिक शास्त्रों के अनुसार हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

1. ऐसा भी कहा गया है कि पीपाल (अश्वत्थ) का प्रदक्षिणा (परिक्रमा) करना अधिक शुभ माना जाता है। क्या इस तरह के अनुष्ठान करने में कोई विशिष्ट दिन या तारा है? इसे कैसे करें। इस तरह के प्रदक्षिणा (परिक्रमा) करते समय कोई भी श्लोक (व्यारूया करना) । कृपया हमें स्पष्ट करें।

हां. अश्वत्थ वृक्ष की प्रदक्षिणा करना बहुत शुभ और स्वस्थ माना जाता है। शास्त्रों और चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, हर दिन, सुबह जल्दी, सूर्योदय से पहले बहुत अनुकूल होता है। आम तौर पर प्रदक्षिणा अमावस्या के दिनों में किया जाता है। यदि सोमवर (सोमवार) अमावस्या पर पड़ता है (सोमवार का दिन अमावस्या तिथी है), तो यह अधिक शुभ होता है। प्रदक्षिणा करते समय निम्नलिखित श्लोक का जाप करना होता है।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे |
अग्रत: शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नम: ||
mūlatō brahmarūpāya madhyatō viṣṇurūpiṇē |
agrata: śivarūpāya vṛkṣarājāya tē nama: ||

यह श्लोक अश्वत्थ स्तोत्रम में दिया गया है-जिसे ब्रह्मदेव ने नारद को निर्देश दिया था। अश्वथ वृक्ष त्रिमूर्ति-ब्रह्मा, विष्णु और शिव का अवतार है। 108 बार प्रदक्षिणा करने से दिव्य कृपा प्राप्त होगी और व्यक्ति सभी पापों से शुद्ध हो जाएगा। अश्वत्थ प्रदक्षिणा एक व्यक्ति को विवाह, बच्चे, स्वास्थ्य और दीर्घायु का आशीर्वाद देगी।

२. हम देखते हैं कि कई धार्मिक नेता उन व्यक्तियों से दान और समर्थन स्वीकार करते हैं जो उन स्रोतों से धन कमाने के लिए जाने जाते हैं जो कानूनी या सही नहीं हैं। इसे कैसे सुलझाएं?

जवाब एक औचित्य की तरह लग सकता है। लेकिन, इसे एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से देखना बहुत महत्वपूर्ण है। पैसा, क्योंकि यह अच्छा या बुरा नहीं है। जिस व्यक्ति के पास यह है, उसका चरित्र पैसे पर अधिरोपित होता है। यदि हम दान की जड़ या स्रोत का विश्लेषण करते हैं, तो उनमें से अधिकांश अवैध रूप से अर्जित किए जाते हैं। यह केवल वर्तमान स्थिति में ही नहीं है। अतीत में भी इसी तरह की परिस्थितियाँ थीं, इसलिए, एक प्रार्थनाशिट्टा होती है-नियमित संध्या वंदनम और मध्यनिकम में असत प्रतिग्रह के लिए एक प्रार्थना-गलत स्रोत से अर्जित धन।

कई धार्मिक नेता सनातन धर्म की महान सेवा में अथक रूप से शामिल हैं। ऐसा करने के लिए उन्हें पैसे की भी आवश्यकता होती है। अवैध स्रोतों से धन स्वीकार करना वास्तव में उनके मूल्यों के खिलाफ है। ऐसी परिस्थितियाँ थीं, जब उन्होंने इस तरह के पैसे लेने से भी इनकार कर दिया था। लेकिन कई नेता, बड़े परिणाम-समाज के कल्याण को ध्यान में रखते हुए, ऐसे अवैध व्यक्तियों से पैसा लेते हैं। अगर ऐसे स्रोतों से पैसा लेने से उन्हें पाप मिलने वाला है, तो वे उसे भी स्वीकार करेंगे।

अंत में, हर किसी को अपने कार्यों के फल का अनुभव करना होगा, चाहे वह नेक हो या बुरा।

(जारी रहेगा..)

पूजा विधान

पूजा विधि कैसे करें?

हिंदू धर्म के अनुसार सगुण (भौतिक) उपासना का आधार देवताओं की पूजा विधि (अनुष्ठानिक पूजा) है। 'व्यस्त दैनिक जीवन में पूजा के लिए किसके पास समय है?' इस प्रकार का नकारात्मक दृष्टिकोण कई लोगों का होता है। आज, हम चारों ओर जो देखते हैं वह यह है कि पूजा के नाम पर, लोग बस एक मूर्ति पर जल्दी से पानी डालते हैं, गंधा (चंदन का पेस्ट) का तिलक लगाते हैं और कुछ फूल चढ़ाते हैं और अगरबत्ती लहराते हैं। लेकिन क्या जल्दबाजी में किए गए इस कार्य को कभी भगवान की पूजा कहा जा सकता है, जो हमारे भरण-पोषण की पूरी देखभाल करता है? भगवान को हम पर अपनी कृपा क्यों बरसानी चाहिए? यदि हम उचित तरीके से भगवान की पूजा करके उनका सम्मान करते हैं, जैसे कि हम एक अतिथि के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हैं, तो भगवान हम पर प्रसन्न होंगे और हम पर अपनी प्रचुर कृपा की बौछार करेंगे। इसलिए, शास्त्रों ने हमें सोलह क्रमिक चरणों में भगवान की पूजा करने के लिए सिखाकर एक अनुष्ठानिक और भाव (आध्यात्मिक भावना) समृद्ध तरीके से धर्म (धार्मिकता) का पालन करना सिखाया है, जैसे कि भगवान का आह्वान करना, उन्हें एक आसन प्रदान करना, उन्हें अपने पवित्र पैर धोने के लिए पानी देना आदि। इस तरह से पूजा करने को शोदाशोपाचार पूजा के रूप में जाना जाता है, यानी सोलह विशिष्ट पदार्थों का उपयोग करके की जाने वाली पूजा। इन सोलह उपचरों (अनुष्ठान में विशिष्ट कदम) में से पाँच उपचर, अर्थात्, गंधा लगाना, फूल चढ़ाना, धूप लहराना (धूप) आरती और नैवेद्य चढ़ाना पंचोपचार पूजा का निर्माण करते हैं। यदि शोदाशोपाचार पूजा करना संभव नहीं है, तो पंचोपाचार पूजा की जा सकती है।

हमें अपने सर्वज्ञानी ऋषियों की संकल्प-शक्ति (संकल्प की ऊर्जा) का लाभ तभी मिलता है जब हम अपने शास्त्रों की सलाह के अनुसार पूजा विधि करते हैं। शास्त्रों में उल्लिखित पूजा करते समय, परम भक्ति और भाव समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। अगर पूजा विधि करते समय भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति की कमी है, तो वह उन तक नहीं पहुंचती है; क्योंकि, भगवान भाव के लिए तरसते हैं।

शास्त्रों में वर्णित विज्ञान के अनुसार सख्ती से किए गए उपचरों को और देवता को आस्था से भरे अन्तहकरण के साथ अर्पित करना, देवता की पूजा कहलाती है। तभी यह देवता की अपेक्षाओं के अनुसार होता है, और इसे सही अर्थों में 'पूजा' कहा जा सकता है।

1. पूजा विधि का सृजन

अ). पूजा के अनुष्ठानों से संबंधित कार्य ब्रह्मांड में इच्छा-शक्ति (इच्छा की ऊर्जा) की मदद से बनाए गए थेः कर्मकांड से जुड़े कार्य जैसे पूजा, नैवेद्य चढ़ाना आदि। वे ब्रह्मांड में इच्चा-शक्ति से जुड़े हुए हैं। इन कार्यों को करते समय व्यक्ति के भाव (आध्यात्मिक भावना) के आधार पर, विशिष्ट कार्य के माध्यम से, व्यक्ति संबंधित देवता की इच्छा-शक्ति से जुड़ी तरंगों को प्राप्त करता है।

आ). हिंदू धर्म सगुण (भौतिक) उपासना पर आधारित हैः मूल रूप से, हिंदू धर्म कर्मकांड पर आधारित है, जिसका अर्थ है सगुण। शोदाशोपाचार पूजा का पहला भाग (उपचर 1 से 8) कुंडलिनी (आध्यात्मिक ऊर्जा) से व्यक्ति की ऊपर की ओर भ्रामक प्रगति है जिसका उद्देश्य निर्गुण (गैर-भौतिक) प्राप्त करना है। .. पूजा का समापन भाग (उपचर 9 से 16) कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से अद्वैत (अद्वैत) के माध्यम से निर्गुण की ओर वास्तविक प्रगति है।

Our Website link : https://voiceofjagadguru.com/voj/

Telegram Channel : https://t.me/voiceofjagadguru

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: https://chat.whatsapp.com/Ly4wlaTu8Kc3sjjEYU8KGu

YouTube Channel : https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UlI

Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringerī
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand	Web Director	Coimbatore
Smt B Srimathi Veeramani	Web Asst Director & Chief Editor	Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli
Sri M Venkatachalam & Team	Translator/writer	Tiruvananthapuram